सेवा में,

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853116
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म् आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 11 रोहतक 14 अगस्त, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

अहं के त्याग से ही प्रभु का साक्षात्कार होगा

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जब तक देह की ममता रहेगी, तब तक किए हमारे लिए बन्धन का कारण बनते रहेंगे। जब तक देह में आसक्ति रहेगी, विकार हमारा पीछा न छोड़ेंगे। जब तक देह का ध्यान बना रहेगा, तब तक प्रभु के गीत हम न गा सकेंगे। जब तक हम अपने आप को देह मानते रहेंगे, तब तक परमपिता परमात्मा का साक्षात्कार नहीं हो पाएगा। हृदय पूर्वक, श्रद्धा एवं ज्ञान का सहारा लेकर प्रभु से प्रार्थना करो—हे दया के सागर! मुझे बल दे, मुझे साहस दे, मैं तेरे द्वार पर आया हूँ। तेरे पास अक्षय भण्डार है। मैं इस देह की ममता को छोड़कर आपसे मिलना चाहता हूँ। शरीर को मैं केवल साधन बनाना चाहता हूँ, साध्य नहीं। हम खाने के लिए नहीं जीना चाहते, जीने के लिए खाना चाहते हैं। बस ज्यों-ज्यों यह स्थिति होती जायेगी, विवेक प्रवेश करता जायेगा, वैराग्य आता जायेगा। यह विवेक वैराग्य श्मशान वैराग्य नहीं होगा।

हमें कई बार कुछ घटनायें श्मशान वैराग्य की स्थिति में ले आती हैं कोई मृत्यु घर में आ जाये और मृत्यु भी किसी अत्यधिक प्रिय की या व्यापार में कोई बहुत बड़ी हानि हो जाये या कोई बड़ा अपमान, अपयश मिल जाये। ऐसी कुछ परिस्थितियां हैं जिस में क्षणिक वैराग्य होता है, इसे श्मशान वैराग्य कहते हैं। वास्तविक वैराग्य तो तब होता है जब व्यक्ति की लौ परम सत्तावान् से जुड़ती है। वैराग्य हुआ था शंकराचार्य को, छोटी आयु में संन्यास लेने की ठान लेता है, वैराग्य हुआ राजकुमार सिद्धार्थ को और वह बुद्ध बन गया, वैराग्य हुआ था मूलशंकर को, जो विश्व की धरा पर आर्यसमाज जैसी पवित्र संस्था का निर्माण कर संसार को एक पवित्र दिशा दे गया। वैराग्य हुआ था मुंशीराम को, सारी सम्पत्ति गुरुकुल को प्रदान कर विश्व में प्राचीन गुरुकुलीय प्रणाली को पुनर्जीवित किया। यह है सच्चा वैराग्य, जो मानव को उच्च स्थिति प्राप्त करा देता है बिना विवेक और वैराग्य के ब्रह्मा जी का उपदेश भी हमारे काम नहीं आयेगा।

विवेक और वैराग्य होते ही ज्ञान की ज्योति जल उठेगी। शरीर की ममता टूटने लगेगी। शरीर की ममता से मोह भंग होगा तो सब संबंध ढीले होते जायेंगे। अंहता-ममता टूटने पर हमारा व्यवहार प्रभु जैसा व्यवहार बन जायेगा। हमारा बोलना प्रभु प्राप्ति का साधन बन जाएगा। हम देखना, सुनना सब भगवान् प्राप्ति के लिए ही हो जायेगा। केवल आवश्यकता है अहंभाव तोड़ने की, शरीर के प्रति ममता त्यागने की।

महर्षि दयानन्द के पिता ने रोका। पिता पुत्र को सांसारिक बन्धनों में बांधना चाहते थे, परन्तु मूलशंकर तो सच्चे शिव की खोज में इस शरीर के मोह से ऊपर उठ चुका था। ममता, मोह के त्याग ने ही मूलशंकर को स्वामी दयानन्द सरस्वती बना दिया। उन्होंने विचार किया कि परिवार, संबंधी, मित्रगण, इनकी ममता का बंधन संसार से जकड़न बढ़ाता जायेगा। बहिन की मृत्यु से कुछ मोह भंग हुआ था, चाचा की मृत्यु ने उसे पूर्ण रूप से वैराग्यवान् बना दिया और परिणाम यह हुआ कि सच्चे शिव की खोज में उस महामानव ने अपने आपको आहुत कर दिया। यह था सच्चा वैराग्य। उन्होंने परिवार के मोह को ज्ञान की कैंची से काट दिया। प्रभु के मार्ग में, आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में दुनिया के किसी भी व्यक्ति को आड़े नहीं आने दिया। उसने अन्दर की चेतना का सहारा लिया।

दु:ख और चिन्ता, असफलता और हतोत्साहित होना यह सब अन्दर से उत्पन्न होती हैं। प्रत्येक आत्मा अन्दर से इन परिणामों से युद्ध करती है परन्तु जो उच्च आत्मायें होती हैं वे सफल हो जाती हैं। परन्तु दुर्बल आत्मायें पराजित होकर इस संसार चक्र के बन्धनों में अपने आपको बांध लेती हैं आवागमन के चक्र में पड़ती रहती हैं। हमें भीतर से दीन-हीनता एवं क्षुद्रता को त्यागना होगा। परिस्थितियों के आगे झुक जाने के स्थान पर परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढालना होगा। हमें विद्वानों की अनुभूतियों, अनुभवों का सहारा लेना होगा। हम कब तक डरते रहेंगे, हमें अभय होना होगा। कब तक हम नेताओं को, व्यापारियों को, धनपतियों को रिझाते रहेंगे? अब हमें अपने आपको रिझाना होगा। एक बार हम अपने आप से मित्रता कर लें, तो पूरा विश्व हमारा मित्र बन जाएगा। जब तक कुछेकों से मित्रता करेंगे, कुछ शत्रु भी पाल लेंगे और जब हम अपने आप से मित्रता कर लेंगे, तो हमारा कोई शत्रु नहीं रहेगा। हम प्रतिदिन अपनी पत्नी से, पति से, माता से, पिता से, पुत्र, पौत्रों से सम्बन्धियों, विद्वानों से, नेताओं से, न जाने किन-किन से बातें करते हैं परन्तु दु:ख की बात यह है कि हम कभी स्वयं से बात नहीं करते। जिस दिन हम स्वयं से बात करने लगेंगे, उस दिन से हमारी आत्मा में उज्वलता आनी प्रारम्भ हो जायेगी। **'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पश्यति'** की भावना हमारे अन्दर आ जायेगी परन्तु यह तब होगा जब हम अपने आप से मित्रता कर लेंगे। जब हम अपने आप से मित्रता कर लेंगे, तो प्रभु से मित्रता और भी सरल हो जायेगी, क्योंकि वह तो हमारे अन्दर बैठा ही है, वह प्रतीक्षा कर रहा है कि कब हम अपने आपसे मित्रता करना प्रारम्भ करते हैं?

विद्वानों ने बताया है कि यदि हमें शान्ति चाहिए तो अपने अहं को त्यागना होगा। वास्तविकता यह है कि जिस ओर शान्ति मिलती है, हम उस ओर जाना ही नहीं चाहते हैं। अशान्ति में बैठे-बैठे शान्ति की बातें करते हैं। जितना हम अहं को त्यागेंगे, उतनी शान्ति मिलेगी। अहं को त्यागे बिना शान्ति मिल जाये, यह तो संभव नहीं है। जहां अहं है, वहां राग है, जहां राग है, वहां द्वेष है, जहां द्वेष है, वहां ममता है, इनके सब के बीच में हम बैठे हैं और मांगते हैं शान्ति। शान्ति कैसे मिलेगी? ऋषि-मुनियों ने कहा है—**'आओ त्याग करो, शान्ति मिलेगी।'**

जब व्यक्ति रात्रि को गहरी नींद में सो रहा होता है, तब उसे न घर की चिन्ता रहती है, न दुकान की चिन्ता रहती है, न बच्चों की, न पत्नी की और न ही किसी और की याद आती है। उस समय उसको शान्ति मिलती है, क्योंकि उस समय वह सभी बाह्य कर्मों का त्याग कर देता है। परन्तु ज्यों ही नींद खुलती है फिर वही अशान्ति पुन: घेर लेती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब हम संसार को स्मरण

क्रमशः पृष्ठ 7 पर...

महर्षि दयानन्द का वर्णव्यवस्था पर ऐतिहासिक उपदेश

❑ मनमोहन कुमार आर्य

आज से लगभग 140 वर्ष पूर्व हमारा समाज अज्ञान व अन्धकार से आवृत्त तथा रूढ़िवादी परम्पराओं में जकड़ा हुआ था। सामाजिक विषमता अपने जटिलतम रूप में व्याप्त थी। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने वेद एवं वैदिक साहित्य से समाज सुधार के क्रान्तिकारी विचारों व मान्यताओं को प्रस्तुत किया था। यह भी तथ्य है कि वेद आदि शास्त्रों के विचारों व मान्यताओं को गलत रूप में प्रस्तुत कर अज्ञानी व स्वार्थी लोगों ने गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित आदर्श सामाजिक व्यवस्था को बिगाड़ा था जिन्हें स्वामी दयानन्द ने अपनी ऊहा शक्ति से यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर प्रचलित व्यवस्था का सुधार व परिष्कार किया। आज हम स्वामी दयानन्द प्रणीत सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में प्रस्तुत उपदेश प्रस्तुत कर रहे हैं। उनके इन विचारों से ही स्वर्णिम व आधुनिक भारत के निर्माण की नींव पड़ी जिसका कुछ दिग्दर्शन वर्तमान भारत को देखकर किया जा सकता है। लक्ष्य अभी बहुत दूर है जिसके लिये हमें निरन्तर प्रयास करने होंगे।

उन दिनों प्रचलित जन्मना वर्णव्यवस्था के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द कहते हैं कि क्या जिसके माता पिता ब्राह्मण हों, वह ब्राह्मणी-ब्राह्मण होते हैं और जिसके माता-पिता अन्य वर्णस्थ हों, क्या उनके सन्तान कभी ब्राह्मण हो सकते हैं? इसका उत्तर देते हुए वह कहते हैं कि हां, बहुत से हो गये, होते हैं और आगे होंगे भी। छान्दोग्य उपनिशद् में जाबाल ऋषि, अज्ञातकुल, महाभारत में विश्वामित्र क्षत्रिय वर्ण और मातंग ऋषि चाण्डाल कुल से ब्राह्मण वर्ण वाले हो गये थे। अब भी जो उत्तम विद्या स्वभाव वाला है वही ब्राह्मण के योग्य और मूर्ख शूद्र के योग्य होता है और वैसा ही आगे भी होगा। वह प्रश्न करते हैं कि भला माता-पिता के रज-वीर्य से जो शरीर हुआ है वह बदलकर दूसरे वर्ण के योग्य कैसे हो सकता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए वह बताते हैं कि रज-वीर्य के योग से ब्राह्मण शरीर नहीं होता किन्तु **'स्वाध्यायेन जपैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः। महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।।'** यह मनुस्मृति का श्लोक है। इस का अर्थ है कि (स्वाध्येयेन) पढ़ने-पढ़ाने (जपैः) विचार करने-कराने नानाविध होम के अनुष्ठान, सम्पूर्ण वेदों को शब्द, अर्थ, सम्बन्ध, स्वरोच्चारणसहित पढ़ने-पढ़ाने (इज्यया) पौर्णमासी, इष्टि आदि के करने, वैदिक विधिपूर्वक (सुतैः) धर्म से सन्तानोत्पत्ति (महायज्ञैष्च) वेदानुकूल ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, वैश्वदेवयज्ञ और अतिथियज्ञ, (यज्ञैश्च) अग्निष्टोमादि-यज्ञ, विद्वानों का संग, सत्कार, सत्यभाषण, परोपकारादि सत्कर्म और सम्पूर्ण शिल्पविद्यादि पढ़ के दुष्टाचार छोड़ श्रेष्टाचार में वर्त्तने से (इयम्) यह (तनुः) शरीर (ब्राह्मी) ब्राह्मण का (क्रियते) किया जाता है। क्या इस श्लोक को तुम नहीं मानते? फिर क्यों रज-वीर्य के योग से वर्णव्यवस्था मानते हो? पौराणिक परम्परावादी कहता है कि मैं अकेला नहीं मानता किन्तु बहुत से लोग परम्परा से ऐसा ही मानते हैं।

पौराणिक महर्षि दयानन्द से पूछते हैं कि क्या तुम परम्परा का भी खण्डन करोगे? दयानन्द जी कहते हैं कि नहीं, परन्तु तुम्हारी उल्टी समझ को नहीं मानकर खण्डन करते हैं। फिर प्रश्न होता है कि हमारी उलटी और तुम्हारी सूधी समझ है इसमें क्या प्रमाण है? दयानन्द जी कहते हैं कि यही प्रमाण है कि जो तुम पांच-सात पीढ़ियों से आरम्भ हुई परम्पराओं को सनातन व्यवहार मानते हो और हम वेद तथा सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त की परम्पराओं को मानते हैं। देखो ! जिस का पिता श्रेष्ठ उस का पुत्र दुष्ट और जिस का पुत्र श्रेष्ठ उस का पिता दुष्ट तथा कहीं-कहीं दोनों श्रेष्ठ वा दुष्ट देखने में आते हैं इसलिये तुम लोग भ्रम में पड़े हो। देखो ! मनु महाराज ने क्या कहा है-

येनास्य पितरो याता येन याता पितामहाः। तेन यायात्सतां मार्गं तेन गच्छन्न रिष्यते।।

जिस मार्ग से किसी के पिता व पितामह चले हों, उसी मार्ग में सन्तान भी चले परन्तु (सताम्) जो सत्पुरुष पिता-पितामह हों, उन्हीं के मार्ग में चलें और जो पिता-पितामह दुष्ट हों तो उनके मार्ग में कभी न चलें, क्योंकि उत्तम धर्मात्मा पुरुषों के मार्ग में चलने से दुःख कभी नहीं होता इस को तुम मानते हो वा नहीं? वह कहते हैं कि हां, हां, मानते हैं। महर्षि आगे कहते हैं और देखो ! जो परमेश्वर द्वारा प्रकाशित वेदोक्त बातें हैं, वही सनातन और जो उसके विरुद्ध हैं वह सनातन कभी नहीं हो सकती। ऐसा ही सब लोगों को मानना चाहिये वा नहीं? अवश्य मानना चाहिये। जो ऐसा न माने, उस से कहो कि किसी का पिता दरिद्र हो, यदि उसका पुत्र धनाढ्य होवे तो क्या अपने पिता की दरिद्रावस्था के अभिमान से धन को फेंक देवे? क्या जिस का पिता अन्धा हो तो उस का पुत्र भी अपनी आंखों को फोड़ लेवे? जिस का पिता कुकर्मी हो तो क्या उस का पुत्र भी कुकर्म को ही करे? नहीं-नहीं किन्तु जो-जो पुरुषों के उत्तम कर्म हों उन का सेवन और दुष्ट कर्मों का त्याग कर देना सब को अत्यावश्यक है।

जो कोई माता-पिता के रज-वीर्य के योग से वर्णाश्रम-व्यवस्था माने और गुण कर्मों के योग से न माने तो उससे पूछना चाहिये कि जो कोई अपने वर्ण को छोड़ नीच, अन्त्यज अथवा क्रिश्चियन व मुसलमान हो गया हो, उसको भी ब्राह्मण क्यों नहीं मानते? यहां यही कहोगे कि उसने ब्राह्मण के कर्म छोड़ दिये इसलिये वह ब्राह्मण नहीं है। इस से यह भी सिद्ध होता है कि जो ब्राह्मणादि उत्तम कर्म करते हैं, वे ही ब्राह्मणादि और जो निम्न कुल का व्यक्ति भी उत्तम वर्ण के गुण, कर्म, स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में और जो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना अवश्य चाहिये।

प्रश्न–ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यामशूद्रो अजायत।।

यह यजुर्वेद के इकतीवें अध्याय का ग्यारहवां मन्त्र है। इसका यह अर्थ है कि ब्राह्मण ईश्वर के मुख, क्षत्रिय बाहू, वैश्य ऊरू और शूद्र पगों के उत्पन्न हुआ है। इसलिये जैसे मुख न बाहू आदि और बाहू आदि न मुख होते हैं, इसी प्रकार ब्राह्मण न क्षत्रियादि और क्षत्रियादि न ब्राह्मण हो सकते हैं।

उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर महर्षि दयानन्द देते हैं कि इस मन्त्र का अर्थ जो तुमने किया वह ठीक नहीं है क्योंकि यहां पुरुष अर्थात् निराकार व्यापक परमात्मा की अनुवृत्ति अर्थात् उसका कथन व वर्णन है। जब वह निराकार है तो उसके मुखादि अंग नहीं हो सकते, जो मुखादि अंग वाला हो वह पुरुष अर्थात् व्यापक नहीं और जो व्यापक नहीं वह सर्वशक्तिमान्, जगत् का स्रष्टा, धर्त्ता, प्रलयकर्त्ता, जीवों के पुण्य-पापों की व्यवस्था करनेहारा, सर्वज्ञ, अजन्मा, मृत्युरहित आदि विशेषण वाला नहीं हो सकता। इसलिये इस का अर्थ यह है कि जो (अस्य) पूर्ण व्यापक परमात्मा की सृष्टि में मुख के सदृश सब में मुख्य उत्तम हो वह (ब्राह्मणः) ब्राह्मण (बाहू) **'बाहुर्वै बलं बाहुर्वै वीर्यम्'** (शतपथ-ब्राह्मण) बल-वीर्य का नाम बाहू है वह जिस में अधिक हो सो (राजन्यः) क्षत्रिय, (ऊरू) कटि के अधो और जानु के उपरिस्थ भाग का नाम है जो सब पदार्थों और सब देशों में ऊरू के बल से जावे आवे व प्रवेश करे, वह (वैश्यः) वैश्य और (पद्भ्याम्) जो पग के अर्थात् नीच अंग के सदृश मूर्खत्वादि गुणवाला हो वह शूद्र है। अन्यत्र शतपथ ब्राह्मणादि ग्रन्थ में भी इस मन्त्र का ऐसा ही अर्थ किया है। जैसे-**'यस्मादेते मुख्यास्तस्मान्मुखतो ह्यसृज्यन्त'** इत्यादि। जिससे ये मुख्य हैं, इससे मुख से उत्पन्न हुए ऐसा कथन संगत होता है अर्थात् जैसा मुख सब अंगों में श्रेष्ठ है वैसे पूर्ण विद्या और उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव से युक्त होने से मनुष्य जाति में उत्तम ब्राह्मण कहाता है। जब परमेश्वर के निराकार होने से मुखादि अंग ही नहीं हैं तो मुख आदि से उत्पन्न होना असम्भव है। जैसा कि वन्ध्या स्त्री आदि के पुत्र का विवाह होना। और जो मुखादि अंगों से ब्राह्मणादि उत्पन्न होते तो उपादान कारण के सदृश ब्राह्मणादि की आकृति अवश्य होती। जैसे मुख का आकार गोल मोल है वैसे ही उन के शरीर का भी गोलमोल मुखाकृति के समान होना चाहिये। क्षत्रियों के शरीर भुजा के सदृश, वैश्यों के ऊरू के तुल्य और शूद्रों के शरीर पग के समान आकार वाले होने चाहियें। ऐसा नहीं होता और जो कोई तुम से प्रश्न करेगा कि जो-जो मुखादि से उत्पन्न हुए थे उन की ब्राह्मणादि संज्ञा हो परन्तु तुम्हारी नहीं, क्योंकि जैसे और सब लोग गर्भाशय से उत्पन्न होते हैं वैसे तुम भी होते हो। तुम मुखादि से उत्पन्न न होकर ब्राह्मणादि संज्ञा का अभिमान करते हो इसलिये तुम्हारा कहा अर्थ व्यर्थ है और जो हम ने अर्थ किया है वह सच्चा है। ऐसा ही अन्यत्र भी कहा है। जैसा-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्। क्षयित्रयाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्चात्तथैव च।।

यह मनुजी का वचन है। जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण, कर्म, स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाय तथा वैसे ही बाह्मण, क्षत्रिय और वैश्यकुल में उत्पन्न हुआ हो और उस के गुंण, कर्म, स्वभाव शूद्र के सदृश हों तो वह शूद्र हो जाय। वैसे ही क्षत्रिय व वैश्य के कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण वा शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाता है अर्थात् चारों वर्णों में जिस-जिस वर्ण के सदृश जो-जो पुरुष स्त्री हो वह-वह उसी वर्ण में गिनी जावें।

शेष पृष्ठ 8 पर...

ओ३म्

ईश्वर को प्राप्त करके ही मुक्ति मिल सकती है

-: वेद-मन्त्र :-

वेदाऽहं तं पुरुषं महान्तमादित्य: वर्णं तमस: परस्तात्।
तमेव विदित्वा अतिमृत्युमेति नान्यपंथा विद्यते अनायम्॥

व्याख्या—वेदाऽहं तं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णम्— वेदमन्त्र में ऋषि कहते हैं। मैं उस महानतम पुरुष परमपिता परमेश्वर को जानता हूं। जिसने इस सृष्टि की रचना की है, पालन कर रहा है एवं धारण कर रहा है। वह सूर्य के समान वर्ण वाला, अर्थात् उसी के तेज से ही ये असंख्य ग्रह (सूर्यादि) प्रकाश प्राप्त करके समस्त सृष्टि को प्रकाशित कर प्राणिमात्र के हित में आकाश में विचरण कर रहे हैं।

तमस: परस्तात्—वह महान् पुरुष अज्ञानरूपी अन्धकार से परे है। अर्थात् अज्ञानी व्यक्ति उसे प्राप्त नहीं कर सकते तथा वही परमपिता परमेश्वर समस्त ज्ञान विज्ञान का भण्डार है।

'तत्र निरतिशय सर्वस्य बीजम्' उस परमपिता परमेश्वर ने ही समस्त ज्ञान-विज्ञान को बीज रूप से वेदों के रूप में **ऋषियों** के माध्यम से सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य को दिया। **क्रमश:**

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य देवव्रत हिमाचल के राज्यपाल बने

कुरुक्षेत्र। शिक्षाविद् डॉ. देवव्रत आचार्य को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। राष्ट्रपति भवन के अनुसार उनकी नियुक्ति उनके कार्यभार ग्रहण करने की तारीख से प्रभावी होंगी। डॉ. देवव्रत आचार्य कुरुक्षेत्र स्थित गुरुकुल के प्राचार्य हैं। आचार्य देवव्रत जी करीब 35 साल से गुरुकुल में हजारों छात्रों को सुशिक्षित और सुसंस्कारित कर चुके हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं हरयाणा प्रदेश की समस्त आर्यसमाजें आपके राज्यपाल नियुक्त होने पर गौरवान्वित एवं प्रसन्नता महसूस कर रही हैं। परमपिता परमात्मा आपको और आगे बढ़ने की शक्ति एवं बुद्धि देवे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से आपको बधाई एवं शुभकामनाएं।
—रामपाल आर्य, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

बलिदान दिवस एवं सामवेद पारायण यज्ञ

भक्त फूलसिंह स्मारक समिति माहरा जिला सोनीपत हरयाणा के तत्त्वावधान में भक्त फूलसिंह जी महाराज का 74वाँ बलिदान दिवस एवं तीन दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ दिनांक 14, 15, 16 अगस्त 2015 समय प्रात: 8 से 10.15 बजे एवं सायंकाल 4 से 6 बजे तक मनाया जा रहा है जिसमें अनेक विद्वान् एवं संन्यासी वृंद पधार रहे हैं।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य बलदेव जी महाराज एवं मुख्य अतिथि श्री रमेश कौशिक, संसद सदस्य व श्रीमती कविता जैन, समाज कल्याण महिला एवं बाल विकास, स्थानीय शहरी विकास मंत्री (हरियाणा सरकार) तथा वरिष्ठ अतिथि राजीव जैन उपाध्यक्ष भाजपा हरियाणा होंगे।

इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य सोमदेव जी (ऋषि उद्यान, अजमेर), आमन्त्रित विद्वान्-यज्ञ ब्रह्मा-संजय याज्ञिक जी मेरठ, सतनदेव वेदपाठी मॉडल टाउन, आचार्य विजयपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा अध्यक्ष हरियाणा, विशेष आमन्त्रित श्री रामपाल दहिया, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा आर्य भजनोपदेशक पं० योगेशदत्त आर्य बिजनौर आदि पधार रहे हैं।

अत: आपसे प्रार्थना है कि अपने इष्ट-मित्रों सहित कार्यक्रम में पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें।

रमेश आर्य, वेदप्रचार मण्डल, सोनीपत मो० 9466845332
ओमप्रकाश आर्य, गांव माहरा, सोनीपत मो० 8930138450

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

द्वितीय समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 271. स्त्रियों को कैसी-कैसी विद्या दी जानी चाहिए?

उत्तर-स्त्रियों को व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्पविद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए। क्योंकि इनके सीखे बिना सत्य-असत्य का निर्णय, पति आदि से अनुकूल वर्तमान, यथायोग्य सन्तानोत्पत्ति, उसका पालन, वर्धन और सुशिक्षा करना, घर के सब कार्यों को जैसा चाहिए वैसा करना, वैद्यक विद्या से औषधवत् अन्न-पान बनाना और बनवाना नहीं कर सकती। शिल्प विद्या के जाने बिना घर का बनवाना, वस्त्र-आभूषण आदि का बनाना, बनवाना गणित विद्या के बिना सब का हिसाब समझना-समझाना, वेदादि शास्त्रों के बिना ईश्वर और धर्म को न जानके अधर्म से कभी नहीं बच सकेंगे।

कन्हैयालाल जी आर्य

प्रश्न 272. कौन लोग धन्यवाद के पात्र हैं?

उत्तर-वे लोग धन्यवाद के पात्र हैं, जो अपनी सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा से पूर्ण बल को बढ़ावें, जिससे वे सन्तान माता-पिता, पति-पत्नी, सास-ससुर, राजा-प्रजा, पड़ोसी, इष्टमित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्तें।

प्रश्न 273. शिक्षा के सम्बन्ध में राजा का क्या कर्त्तव्य है?

उत्तर-राजा को योग्य है कि सब कन्याओं और लड़कों को निर्धारित समय तक ब्रह्मचर्य में रखकर ज्ञानी बनाना। जो कोई आज्ञा को न माने तो उसके माता-पिता को दण्ड देना अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् कोई लड़का वा लड़की किसी के घर में न रहने पावें, किन्तु पाठशाला या आचार्यकुल में चले जाएं। जब तक समावर्तन का समय न आवे तब तक विवाह न होने पावे।

प्रश्न 274. विद्या-दान सर्वश्रेष्ठ दान क्यों है?

उत्तर-संसार में जितने दान हैं, चाहे वह अन्न, जल, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, स्वर्ण और घृतादि हैं, यह सब व्यय करने पर घटते जाते हैं, परन्तु विद्यादान ऐसा है, ज्यों-ज्यों खर्चे त्यों-त्यों बढ़े, न खर्चे पर घट जाता है। इसीलिए विद्यादान सर्वश्रेष्ठ दान है।

प्रश्न 270. कौन-सा देश सौभाग्यशाली होता है?

उत्तर-जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान् होता है। **क्रमश:**

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्यजनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, सोमवार, दिनांक 06, 07, 08 मार्च, 2016 को किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्यसमाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

-रामनाथ, सहगल मंत्री, महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. आर्यसमाज धनौंदा, ब्लाक-कनीना (महेन्द्रगढ़) 27 से 29 अक्तू० 2015

—सभामन्त्री

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

अध्यात्म-चर्चा....

ओ३म् का स्वरूप

❑ सत्यवीर शास्त्री, पूर्व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

ओं खम्ब्रह्म। यजु० 40.17

ओ३म् शब्द की व्याख्या—महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं (ओं खं०) **'अवतीत्योम्, आकाशमिव व्यापकत्वात् खम्, सर्वेभ्यो बृहत्वाद् ब्रह्म'**—'रक्षा करने से ओ३म्। आकाश के समान व्यापक होने से खम् और सबसे बड़ा होने से ब्रह्म' ईश्वर का नाम है। सभी वेदादि शास्त्रों में ईश्वर का प्रधान व निज नाम ओ३म् को कहा है।

उपनिषदों के आधार पर परमेश्वर के निज नाम ओ३म् की व्याख्या उपनिषद्कार कहते हैं कि जिस पद को प्राप्त करने के लिए प्राणी (जीवात्मा) मानव शरीर रूपी गाड़ी में सवार होता है। वह पद ओ३म् है। इस ओ३म् पद में तीन अक्षर 'अ', 'उ' और 'म्' विद्यमान हैं।

'अ' अक्षर परमात्मा की सृष्टि के कण-कण में व्यापकता सिद्ध होती है। जिस प्रकार दुग्ध के प्रत्येक कण में घृत की व्यापकता होती है तथा ईक्षुदण्ड (गन्ने) के प्रत्येक अंश में मिठास भरा हुआ होता है।

यहाँ प्रश्न यह पैदा होता है कि ईश्वर की सर्वव्यापकता का क्या प्रमाण है। उपनिषत्कार का वचन है कि **'एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधायः करोति।'**

इसका उत्तर यह है कि **'सर्वभूतान्तरात्मा'** वह ईश्वर सब प्राणियों के शरीर के अन्दर रहने वाले जीवात्माओं की तरह समस्त ब्रह्माण्ड में व्यापक है। जिस प्रकार हमारे शरीर की व्यवस्था ज्ञान एवं नियमपूर्वक होने से जीवात्मा की सत्ता का प्रमाण है उसी प्रकार सृष्टि में सूर्य, चन्द्र, भूमि, नक्षत्र ग्रहादि नियम एवं ज्ञानपूर्वक गति कर रहे हैं। इस नियम को समझकर ही वैज्ञानिक बता सकते हैं कि अमुक मास में, अमुक नक्षत्र अमुक स्थान पर होगा। यह ज्ञानपूर्वक नियमित गति ईश्वर की सत्ता एवं व्यापकता को सिद्ध कर रही हैं। अत: **'एको वशी'** वही एक पद ओ३म् उपरोक्त समस्त ग्रहादि नक्षत्रों को अपने वश में, नियंत्रण में रखकर समस्त ब्रह्माण्ड को गति प्रदान कर रहा है। अत: सबके अन्दर रहने वाला ईश्वर सबके कर्मफलों का विधान करते हैं। कर्मफल देने वाले के बिना तो कर्मों का फल अपने आप हो ही नहीं सकता। इसी कारण उपनिषत्कार के कथन के अनुसार उस ईश्वर को यहाँ 'वशी' सबको वश में, नियम में रखने वाला कहा है।

सरलता से ईश्वरीय ज्ञान को समझने के लिए 'ओ३म्' अक्षर में तीन पद तो चेतन जीवात्मा के, जो प्रकृति के गुणों को अल्पज्ञता से भोगता है, दिखाकर चौथे में जीवात्मा के अन्दर रहने वाले परमात्मा को दर्शाया गया है। जैसे—प्रथम पद, प्रथम मात्रा ओ३म् की 'अकार' है। इस पाद को, इस मात्रा को वैश्वानर नाम से पुकारा गया है। क्योंकि जिस प्रकार 'अ' सब अक्षरों में व्यापक है। बिना 'अ' के किसी अक्षर को बोला नहीं जा सकता, ऐसे ही जो ईश्वर वैश्वानर है, वह सभी पदार्थों में उपरोक्त दृष्टान्तों के अनुसार व्यापक है। बिना उसकी व्यापक सत्ता के विश्व में कोई नियम स्थिर नहीं रह सकता।

दूसरे सम्पूर्ण अक्षरों में अकार प्रथम अक्षर है, इसी प्रकार सृष्टि के सभी कारणों में ईश्वर प्रथम कारण है अर्थात् वह सृष्टि का कर्त्ता है। बिना कर्त्ता के कोई कार्य हो नहीं सकता अर्थात् मिट्टी कभी भी अपने आप घड़ा (मटका) नहीं बन सकती अत: घड़े के निर्माणकर्त्ता कुम्हार को अवश्य मानना पड़ेगा। इसी प्रकार सृष्टि के रचनाकार ओ३म् को अवश्य ही स्वीकार करना पड़ेगा।

प्रश्न-सृष्टि अनादि है। न ही यह कभी नष्ट होगी और न ही अकार सब में व्यापक है।

उत्तर-जो वस्तु विकार वाली हो वह कभी अनादि नहीं हो सकती, विकार वाली वस्तु नाशवान् भी होती है। संसार के पदार्थों में छह विकार दिखाई देते हैं—

(1) उत्पन्न होना, (2) बढ़ना, (3) एक सीमा तक बढ़कर रुक जाना, (4) रूप परिवर्तन होना, (5) घटना, (6) नाश होना पाया जाता है। अत: सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रलय अवश्यम्भावी है।

'जागरितस्थानो वैश्वानरः अकारः प्रथमा मात्रा' (माण्डूक्योपनिषद्)

ओ३म् की यह प्रथम मात्रा अर्थात् प्रथम पाद अकार प्राणी की जागरित अवस्था का परिचय देती है। जागृत अवस्था में प्राणी इन्द्रियरूपी घोड़ों पर सवार होकर लम्बी उड़ान भरता है। आत्मा है तो इन इन्द्रिय रूपी घोड़ों का स्वामी परन्तु ये घोड़े स्वामी के आधीन न रहकर स्वतन्त्र हो जाते हैं। अत: निर्बल आत्मा इन इन्द्रियों की गुलाम हो जाती है।

नीतिकार भर्तृहरि ने सत्य ही कहा है—

कुरङ्ग-मातङ्ग-पतङ्ग-भृङ्ग-मीना हता पञ्चभिरेव पञ्च।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यात् यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च॥

हिरण रसीली मधुर वाणी के कारण, हाथी स्पर्श सुख भोग के कारण, पतङ्ग रूप की सुन्दर चमक के कारण भृङ्ग (भौंरा) सुगन्ध का दास होने के कारण, मच्छली-जिह्वा के रस के स्वाद की दास होने के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। फिर जो मानव पांचों इन्द्रियों के विषयभोग में लिप्त है वह जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त कैसे हो सकता है? अत: ओ३म् की यह प्रथम मात्रा अकार अर्थात् प्रथम पाद मानव को सावधान करते हुए कहती है कि हे मानव तुझे मानव का शरीर इसलिए प्राप्त हुआ है कि तुम जन्म-मरण के बन्धन को तोड़कर मुक्त हो जाओ। मैंने तुझे मानव शरीररूपी रथ जिसमें पांच ज्ञान इन्द्रियां रूपी घोड़े जुड़े हैं। आत्मा को इसका स्वामी बनाकर इसलिए दिया है कि आप इस पर सवार होकर इन इन्द्रिय रूपी घोड़ों को संयम की लगाम से वश में करके मुक्तिमार्ग के पथगामी बनो। मैं तुम्हारे अन्दर बैठा हुआ तुम्हारे प्रत्येक कर्म का प्रत्यक्ष साक्षी हूँ।

'उ' अक्षर से प्रकाश होना सिद्ध होता है। सृष्टि में मानव से अतिरिक्त जो अन्य प्राणी पशु-पक्षी, कीट-पतंगादि को जो स्वाभाविक ज्ञान होता है। जैसे कि पशु-पक्षी आदि के सद्य उत्पन्न बच्चे को पानी में डाल दिया जाए तो वह तैरने लग जाता है। ऐसा स्वाभाविक ज्ञान मानव को नहीं होता है। अत: सृष्टि के आदि में इस परम पद ओ३म् ने वेदरूपी सूर्य के ज्ञान को ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया।

इसके अतिरिक्त जो प्राकृतिक पदार्थ, सूर्य, चन्द्रमा, तारागणादि ब्रह्माण्ड को प्रकाशित कर रहे हैं। वे भी उस परम पद के प्रकाश से ही प्रकाशित हो रहे हैं। प्रमाण के रूप में—**'तमेव भान्तमनु भाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।'**

जहां, ब्रह्म के दर्शन होते हैं, वहां सूर्य का प्रकाश कार्य नहीं करता। जिस प्रकार सूर्य के समक्ष जुगनू प्रकाश नहीं कर सकता वैसे ही जहां उस प्रभु की चमक नहीं वहां यह सूर्य, चन्द्र व तारे उस स्थान पर प्रकाश नहीं कर सकते और न ही नेत्रों को चकाचौंध करने वाली विद्युत् ही उस स्थान को प्रकाशित कर सकती है। जहां सूर्य, चन्द, तारे तथा विद्युत् प्रकाश न करें तो वहां इस अग्नि के लैम्प व दीपक कैसे प्रकाश कर सकते हैं। उस परमात्मा के प्रकाश से ही ये सभी प्रकाशित हुए हैं। परमात्मा के प्रकाश देने के अतिरिक्त बिजली में प्रकाश करने की शक्ति नहीं है। जिस प्रकार चन्द्रमा व तारे सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं, इसी प्रकार सूर्य भी उसी एक पद के प्रकाश से प्रकाशित होता है।

यदि परमात्मा अपनी शक्ति से परमाणुओं को सतोगुण देकर इस अवस्था में न लावे तो कभी भी सूर्य, चन्द्र और तारे का कहीं नामोनिशान नहीं हो सकता। अत: जो कुछ ब्रह्माण्ड में प्रकाश करने वाली शक्ति है वह उस सर्वव्यापक ओ३म् की ही है।

'स्वप्नस्थानस्तैजस् उकारो द्वितीया मात्रा' द्वितीय मात्रा उकार अर्थात् द्वितीय पद उकार प्राणी की स्वप्न अवस्था का परिचय देती है। जिस प्रकार ओ३म् की उकार मात्रा, अकार एवं मकार मात्रा के मध्य आती है। इसी प्रकार प्राणी को स्वप्न अवस्था, जागृत एवं सुषुप्ति (निद्रा) के मध्य में आती है। आध्यात्मिकवाद में उपनिषत्कार इस अवस्था को जागृत अवस्था से उत्तम मानते हैं, क्योंकि जागृत अवस्था में इन्द्रियों के विषयों के संस्कार लगातार बढ़ते ही रहते हैं, जो स्वप्न अवस्था में रुक जाते हैं अर्थात् नए संस्कार बनने बन्द हो जाते हैं।

यहाँ उकार का अभिप्राय जीवात्मा से है। जो संसार में नैमित्तिक ज्ञान प्राप्त करता है यह जीवात्मा प्रकृति से उत्तम है, क्योंकि प्रकृति में ज्ञान नहीं, और अल्पज्ञ जीवात्मा में ज्ञान की कमी है वह प्रकृति की चकाचौंध में फंसकर जिस प्रकृति में ज्ञान नहीं वहां से ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। वहाँ से ज्ञान न मिलने के कारण जीवात्मा मिथ्याज्ञानी होकर अज्ञान स्वरूप प्रकृति के धर्म दु:ख को ग्रहण कर लेता है। प्रकृति अज्ञान स्वरूप है। जीवात्मा अल्पज्ञानी है। परमात्मा ज्ञानस्वरूप है। जीवात्मा अज्ञानी प्रकृति के संग से दु:खी और

क्रमश: पृष्ठ 6 पर...

मास्टर रामपाल आर्य के पुत्र का देहान्त

❑ प्राचार्य अभय आर्य

रोहतक। दिनांक 10.08.2015 को आचार्य विजयपाल जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का लगभग दोपहर 2.00 बजे दूरभाष आया और सूचना मिली कि मा० रामपाल आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुत्र का देहान्त हो गया। उनका यह पुत्र शिव आर्य जिसकी आयु लगभग 35 वर्ष की थी। लम्बे समय से यकृत् की बीमारी से जूझ रहा था।

ज्ञात रहे कि लगभग 5 वर्ष पहले इनके बड़े पुत्र सत्येन्द्र आर्य का सड़क दुर्घटना में निधन हो गया था। लेकिन इस सारे समय में आदरणीय मास्टर जी बड़ी तन्मयता से आर्यसमाज का कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सेवा करते हुए करते रहे। पुत्र शिव आर्य की लम्बी बीमारी के दौरान वेदप्रचार, सभा की जमीनों को कब्जा मुक्त कराने, विभिन्न केसों की पैरवी आदि सभी मोर्चों पर उन्होंने बड़े साहस व धैर्य से कार्य किया। मैंने स्वयं देखा कि पुत्र का इलाज महंगे से महंगे हस्पताल में चला, लेकिन कभी परेशानी का एक भाव एक पल के लिए भी चेहरे पर नहीं आने दिया। यही आर्योचित व्यवहार है। अनेक आर्य पूर्व में ऐसा करते आए हैं। आदरणीय मास्टर जी ने उस परम्परा में अपना नाम जोड़ लिया है।

इस लोक में कोई भी निरन्तर सुखी नहीं रह सकता और न ही निरन्तर दुःखी रहता है। यही सोचकर धीर लोग नित्य धर्मानुष्ठान में लगे रहते हैं। भाई शिव के निधन की खबर सुनकर तथा उसके अन्तिम संस्कार में शामिल होकर मन-मस्तिष्क पर दुःख-वेदना का मोह छा गया। लेकिन घर आने के बाद विचार किया कि मास्टर जी अब भी कितने धैर्य व साहस में हैं। मैंने सोचा कि मुझे भी इनसे दुःख सहने की यह प्रेरणा लेनी चाहिए। व्यक्ति ऐसी भयंकर आपत्ति में शोक को प्राप्त होता है, फिर उस शोक को दूर करने का उपाय भी मिल जाता है। जब इस आपत्ति की चर्चा मैंने अपने अभिन्न मित्र आचार्य सोमदेव जी से की तो उन्होंने मास्टर जी के धैर्य की बहुत प्रशंसा की तथा कहा कि इनके पौत्र इनकी बहुत सेवा करेंगे। इनके दो पौत्र हैं-आर्यन (छठी कक्षा) तथा अर्पित (चौथी कक्षा)। दोनों मासिक सत्संग में आते हैं। भगवान् उन्हें दीर्घायु, बल, बुद्धि, शील प्रदान करे। कहते हैं कि भार्या के साथ व्यक्ति जंगल में भी खुश व निर्भीक रहता है। मास्टर जी की सहधर्मिणी बड़े ही शान्त स्वभाव की धार्मिक स्त्री हैं। हमने उन्हें कभी किसी की निन्दा-चुगली करते या किसी को उपलम्भ देते नहीं देखा व न ही सुना। इनकी पुत्रवधू सास-ससुर की आज्ञा में चलने वाली हैं।

हम कर्मफल के नियन्ता व स्वामी नहीं हैं, लेकिन उत्तम कर्म करना हमारे हाथ है। ऐसे समय ऋषि-मुनि यज्ञ-महायज्ञ करने की प्रेरणा देते थे। मास्टर जी का तो जीवन पहले ही आचार्य बलदेव जैसे साधुओं की आज्ञा में रहकर धर्म प्रचार को समर्पित है। मास्टर जी! आप सही अर्थों में क्षत्रिय हैं, क्योंकि **'क्षत्रियस्य विशेषेण हृदयं वज्रसन्निभम्'** अर्थात् क्षत्रिय का हृदय विशेषरूप से वज्र के समान कठोर होता है। उनका शान्तियज्ञ 14 अगस्त 2014 को प्रातः 9 बजे उनके निवास स्थान मकान नं० 851, सैक्टर-4, रोहतक में होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें एवं उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार वेदप्रचार का अनोखा केन्द्र

हिसार घोड़ा फार्म रोड पर रेलवे फाटक के पास 'दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय' वेदप्रचार का अनोखा केन्द्र है। हर प्रकार से विद्यालय की शान निराली है। विद्यालय के आचार्य वैदिक विद्वान् डॉ. प्रमोद योगार्थी हैं। इस विद्यालय से आज तक पढ़कर अनेक विद्वान् निकले हैं, जो वेदप्रचार की देश-विदेशों में दुन्दुभि बजा रहे हैं। जैसे—सत्यवीर शास्त्री पूर्व सभामन्त्री, देवव्रत आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र, आचार्य सत्यप्रिय (तिजारा), जगदीशचन्द्र वसु, पं. रविदत्त शास्त्री आदि। आचार्य प्रमोद के कार्यकाल में महात्मा आनन्द स्वामी हाल का पूर्ण निर्माण हुआ। हरयाणा प्रान्त में ऐसा शानदार हॉल कहीं नहीं है। शानदार यज्ञशाला निर्माणाधीन है। शानदार पेड़-पौधे हैं।

कई प्रान्तों के विद्यार्थी निःशुल्क विद्या ग्रहण कर रहे हैं। हिसार में एक यही विद्या का केन्द्र ऐसा है, जिसमें दोनों समय सन्ध्या-हवन, उपदेश तथा एक वेदमन्त्र की व्याख्या अध्यापक वर्ग द्वारा की जाती है। प्रत्येक प्रकार के संस्कारों, पारिवारिक यज्ञ, वेदकथा, उत्सवों में व्याख्यान, भजन आदि की आचार्य अध्यापकों द्वारा तथा छात्रों द्वारा हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध हैं। यहाँ अन्य किसी भी आर्यसमाज में उपलब्ध नहीं हैं।

विद्यालय में वर्ष भर में व्यायाम शिविर, वेद-कथा, वृष्टियज्ञ, सम्मेलन, समारोह, महीने में छात्रों को चार बार विशेष भोजन दिया जाता है। विद्यालय में शानदार लाइब्रेरी है।

वेदप्रचार मण्डल हिसार का उपरोक्त कार्यक्रमों में विशेष सहयोग रहता है। श्री कैलाश कुमार शास्त्री का आचार्य प्रमोद को विशेष सहयोग मिलता है। शहर के लोगों को भी विद्यालय को पूर्ण सहयोग रहता है तथा प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली का विद्यालय को पूर्ण सहयोग मिलता है।

मैं लोगों से यह अनुरोध करता हूँ कि अपने बच्चों को विद्वान् व सभ्य तथा चरित्रवान् बनाने के लिए विद्यालय में प्रवेश दिलवायें ताकि वह माता-पिता व प्रान्त का नाम रोशन कर सके।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही,
संरक्षक-वेदप्रचार मण्डल,
हिसार 9466865351

यज्ञशाला शिलान्यास समारोह सम्पन्न

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में यज्ञशाला शिलान्यास समारोह 2.8.2015 को विधिवत् सम्पन्न हुआ। महात्मा आनन्द स्वामी सभागार में प्रातः 9 बजे पं० रविदत्त शास्त्री द्वारा यज्ञ किया गया। 4 दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया व यज्ञोपवीत धारण किया। उसके बाद डॉ. रमेश कुमार लिखा ने समारोह की अध्यक्षता की। वैदिक विद्वान् डॉ. प्रमोद योगार्थी ने मंच का संचालन किया तथा विद्यालय का परिचय दिया। मुख्य अतिथि श्री दुष्यन्त चौटाला सांसद थे। वह किन्हीं कारणों से नहीं आ सके उनकी एवज में इनेलो पार्टी के विधायक रणवीर गांव गंगवा, श्री वेदनारंग विधायक बरवाला, श्री अनु पंघाणक विधायक उकलाना। दुष्यन्त चौटाला की ओर से न आने की माफी मांगी तथा 25 लाख रुपये दिलाने का आश्वासन दिया। विद्यालय के आचार्य ने तीनों विधायकों को वैदिक साहित्य व गायत्री पट देकर सम्मानित किया। इनके अतिरिक्त डॉ. सुषमा आर्या यमुनानगर, श्री ओ.पी. गुप्ता टोहाना, वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही, सेठ राजकुमार आर्य हिसार को भी वैदिक साहित्य व पट देकर सम्मानित किया गया।

श्री एस.के. शर्मा महामंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने अपने सारगर्भित विचार रखे। विद्यालय के आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री के.एल. खुराना, रणवीर विधायक नलवा, सत्यपाल आर्य, रमेश लिखा आदि ने भी अपने विचार रखे। आर्यसमाज क्या है? क्या चाहता है? पर विस्तार से प्रकाश डाला। मंच पर डॉ. रविदत्त शास्त्री, अत्तरसिंह स्नेही, सेठ राजकुमार आर्य, स्वामी माधवानन्द आदि उपस्थित थे। वरिष्ठ पत्रकार श्री देवेन्द्र उप्पल ने अभिनन्दन पत्र पढ़कर भेंट किया। पं० जबरसिंह खारी तथा बेटी कल्याणी के समाज सुधार के भजन हुये। श्री सत्यपाल आर्य ने सबका धन्यवाद किया। हाजिरी रिकार्डतोड थी। ऋषिलंगर की उत्तम व्यवस्था थी। लगभग 650 नर-नारियों ने भोजन किया। गुरुकुल आर्यनगर से आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री व मुख्य अधिष्ठाता श्री मानसिंह पाठक 30 विद्यार्थियों को लेकर आये। डीएवी स्कूल के स्टाफ भी आए। कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा। सभी लोगों ने व्यवस्था को सराहा।

—कैलाश चन्द्र शास्त्री, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

ओ३म् का स्वरूप....... पृष्ठ 4 का शेष.......

ज्ञानस्वरूप परमात्मा के संग से आनन्द की प्राप्ति करता है। प्रकृति सत् है, जीवात्मा सत्, चित् है तथा ओ३म् (परमात्मा) सत् चित् आनन्द स्वरूप है। मध्य में रहने वाला यदि अपने से न्यून गुणवाली प्रकृति के संग रहता है, तो अज्ञान स्वरूप प्रकृति के गुण ईर्ष्या-द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोहादि दुःखों को प्राप्त करता है और यदि वह सच्चिदानन्द स्वरूप ईश्वर का संग करता है तो वह जो जीवात्मा में आनन्द की न्यूनता है, उसे पूर्ण करके सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा के आनन्द में निमग्न हो जाता है।

इससे निश्श्रेष्ठ, जड़, गतिशून्य प्रकृति में जो ज्ञान एवं नियम पूर्वक गति है, वह भी उस परमपद ओ३म् के द्वारा ही दी गई है, अन्यथा जड़ प्रकृति में ज्ञानपूर्वक नियमानुसार गति होना असम्भव है। जैसे कि इंजन के अन्दर ड्राइवर होता है। इंजन की भाप उसके वश में होती है और सब डिब्बे इंजन के आधीन होते हैं तथा सब यात्री डिब्बों के अन्दर बैठे होते हैं। वाष्परूपी प्राण इंजन को गति दे रहा है। परन्तु ड्राइवर उस गति को ज्ञानानुसार, नियमपूर्वक न रखे तो शीघ्र ही दुर्घटना हो जाए और समस्त यात्री कालग्रस्त हो जायें। अतः ज्ञानपूर्वक गति देने वाला वह परम पद ओ३म् ही है।

दूसरा उदाहरण—जैसे हर मानव जानता है कि लोहे में अपनी गति नहीं है अपितु किसी अन्य की दी हुई है। घड़ी बनाने वाले ने लोहे का यन्त्र बनाकर घड़ी की रचना कर दी और उसको चाबी देकर गति दे दी। अज्ञानी व्यक्तियों के अनुसार तो घड़ी अपने आप अपनी गति से चल रही है, परन्तु बुद्धिमान् व्यक्ति जानते हैं कि घड़ी में अपनी गति नहीं है। वह घड़ी बनाने वाले व्यक्ति की व्यवस्था है। जितने समय तक दी हुई चाबी का बल रहेगा, घड़ी चलती रहेगी। परन्तु जब यह चाबी का प्रभाव कुछ समय के उपरान्त समाप्त हो जायेगा, जो कि चाबी देने वाले ने दे रखा है, तो घड़ी चलनी बन्द हो जायेगी और वह लोहे के समान गतिशून्य हो जाएगी। इसी तरह जितने लोक-लोकान्तर हैं वे सभी उसी एक परमात्मा की बनाई हुई घड़ियाँ हैं, जो उसी एक ब्रह्म के ज्ञान व नियमानुसार चल रहे हैं। व्यक्तिगत रूप में किसी भी लोक-लोकान्तर में गति करने की शक्ति नहीं है। जितनी शक्ति जिस लोक में उस ओ३म् पूर्णशिल्पी विश्वकर्मा ने दे रखी है उतना ही वह लोक कार्य कर रहा है।

'सुषुप्तस्थानः प्राज्ञो मकार-स्तृतीया मात्रा' सोने की अवस्था में मकार तृतीया मात्रा अर्थात् तृतीय पाद कहलाता है। इस अवस्था में जीवात्मा को प्राज्ञ नाम से पुकारा जाता है। जाग्रत अवस्था में मन का इन्द्रियों के विषयों से सम्बन्ध होता है जिससे दुःख ही दुःख होता है। मकान गया मन दुःखी हो गया। जमीन गई, मन दुःखी हो गया। सम्पत्ति नष्ट हो गई मन दुःखी हो गया। जाग्रत अवस्था में अहंकार अपने शरीर से बाहर की वस्तुओं का भी बना रहता है जिसमें दुःख ही दुःख है। परन्तु स्वप्न अवस्था में अहंकार एवं ममत्व अत्यन्त निर्बल हो जाता है। केवल मात्र इन्द्रियों के पदार्थों का सम्बन्ध मन पर बना रहता है। अतः स्वप्न अवस्था जाग्रत अवस्था से उत्तम मानी गई है।

परन्तु जब प्राणी सुषुप्ति (सोने) की अवस्था में होता है तब मैं तथा अहंकार न संसार के पदार्थों में रहता है, न ही शरीर में तथा न ही सूक्ष्म शरीर में रहता है और जब मैं और अहंकार इन नाशवान् वस्तुओं में नहीं रहे तो किसके नाश से दुःख होगा। जीवात्मा का स्वाभाविक गुण ज्ञान प्राप्त करने का होता है। जो बिना जाने, चिन्तन किये बिना नहीं रह सकता। जब सुषुप्ति (निद्रा) के समय मन व इन्द्रियों का बाह्य प्रकृति के ज्ञान से सम्बन्ध समाप्त हो गया तो जीवात्मा अपने अन्दर स्थित सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म के आनन्द में एकरूप हो जाता है। अतः सोने के उपरान्त उठकर मनुष्य कहता है कि आज तो मैं बहुत ही सुख की नींद से सोकर उठा हूँ।

'अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत एवमोंकारः'

उपरोक्त लेख में स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के अभिमान, ममत्व के तीन पाद और तीन मात्रा ओ३म् से प्रकट करके आध्यात्मिक चर्चा की है। अब इन तीनों शरीरों के अभिमानी और ममत्व रखने वाले जीवात्मा के अन्दर व्यापक जो परम पद ओ३म् है उसका केवल जीवात्मा से सम्बन्ध है न कि उपरोक्त शरीरों से। उस परमपद ओ३म् का तथा जीवात्मा का भूख, प्यास, शोक, मोह, हानि, लाभ, जरा, मृत्यु आदि से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तो केवल शरीर के ही धर्म हैं न कि शरीरी के। जिस प्रकार जीव बहुत से हैं, परन्तु परमात्मा एक ही है। जो जीव के अन्दर भी व्यापक है। जो जीवात्मा को इस प्रकार जानता है। वह बाह्य प्रकृति से सम्बन्ध छोड़कर अपने अन्दर व्यापक है वह, यह ब्रह्म है। उसको तथा मुझ आत्मा को भूख, प्यास, दुःख, सुख, हानि, लाभ, जय-पराजय हो ही नहीं सकते। ये तो सब शरीर के धर्म हैं।

जिस प्रकार सूर्य के निकट जाने से अन्धकार स्वयं नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार परम पद ओ३म् को अपने भीतर देखने से सब दोष दूर हो जाते हैं। जो मनुष्य उपनिषद् के इस प्रकार आत्मज्ञान को हृदयंगम करते हैं, वही आत्मज्ञानी होते हैं।

(1) समाधि-जब ज्ञान सहित और शरीर सहित जीव का उस परमपद ओ३म् के साथ सम्बन्ध होता है, उस अवस्था का नाम समाधि है।

(2) सुषुप्ति-जब शरीर सहित और ज्ञानरहित जीव का परम पद ओ३म् से सम्बन्ध होता है, उस अवस्था का नाम सुषुप्ति (निद्रा) होता है।

(3) मुक्ति-शरीर रहित और ज्ञान सहित जब जीव का परमपद ओ३म् से सम्बन्ध होता है उस अवस्था का नाम मुक्ति है।

वेदमार्ग से ही बनेगा भारत विश्वगुरु-आचार्य देवव्रत

विद्याव्रत व. मा. विद्यालय में हुआ भजन-उपदेश कार्यक्रम, दो मिनट का मौन रख कलाम व शहीदों को दी श्रद्धांजलि

कुरुक्षेत्र, 29 जुलाई 2015 : घराड़सी के विद्याव्रत माध्यमिक विद्यालय में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के वेदप्रचार विभाग के प्रचारकों द्वारा राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत भजन-उपदेश के द्वारा विद्यार्थियों को राष्ट्र प्रेम के लिए प्रेरित किया गया। यह जानकारी देते हुए वेदप्रचार विभाग अधिष्ठाता भोपाल सिंह आर्य ने बताया कि कार्यक्रम में गुरुकुल के भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य एवं राजबीर आर्य ने 'मेरे देष के जवान लड़े सीना तान-तान' और 'उन शहीदों का फंसाना याद है' गीत गाकर विद्यार्थियों में देशभक्ति का जज्बा जगाया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रोहतक से पधारे प्रसिद्ध कवि सतपाल देशवाल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विश्व में बदलाव का दौर शुरू हो चुका है और इस बदलाव में भारत की बागडोर युवाओं के हाथ में हैं। युवा जिस दिशा में चलेगा राष्ट्र भी उसी दिशा में चलेगा इसलिए हम सब युवाओं की जिम्मेदारी सबसे अधिक बढ़ जाती है कि हम समाज, राष्ट्र व विश्व को सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ सही दिशा व दशा प्रदान करें। उन्होंने "हम बदलेंगे-युग बदलेगा" के संकल्प मंत्र के साथ युवाओं से योग, प्राणायाम करते हुए अपने अपने विषय में महारत हासिल करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सैनी एवं प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य के मार्गदर्शन में पिछले 3 सालों से चलाये जा रहे वेदप्रचार के इस अभियान के अच्छे परिणाम प्राप्त हो रहे है और लोग आर्यसमाज के सिद्धांतों के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य का कहना है कि वेद मार्ग से ही भारत विश्वगुरु बनेगा, क्योंकि वेदों में ही विश्व का प्रामाणिक ज्ञान निहित है। वेद के एक-एक मंत्र में मानव मात्र की शान्ति, उन्नति और समृद्धि समायी हुई है। वेदपथ पर चलते हुए प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ अपना ही नहीं बल्कि पूरे विश्व का कल्याण कर सकता है। इसलिए विद्यार्थी काल से ही बच्चों को वैदिक ज्ञान देना चाहिए। कार्यक्रम से पूर्व सभी प्रचारकों व विद्यार्थियों ने दो मिनट मौन रखकर भारतरत्न एवं पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम व कारगिल के शहीदों और गुरदासपुर के आतंकी हमले में शहीद हुए पुलिस के जवानों श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर राममेहर शास्त्री ने विद्यार्थियों से जीवन में 2 पेड़ अवश्य लगाने का संकल्प दिलाया। इस अवसर पर प्राचार्य बलवंत सिंह, समिति के प्रधान सत्यवान जी, राममेहर शास्त्री, राकेश , मनोज, गीता, सुमन, ममता, संजय, गुरदीप आदि अध्यापक व अध्यापिकाएं मौजूद रहे।

श्री सन्तलाल आर्य की पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन

ग्राम भाण्डवा जिला भिवानी में खेत की ढाणी में 31.07.2015 को आदर्श अध्यापक व वैदिक विद्वान् की सन्तलाल शास्त्री की पुण्यतिथि पर श्री कैलाशचन्द्र शास्त्री द्वारा यज्ञ किया गया। शास्त्री जी ने सन्त जी के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। अन्य श्रद्धांजलि देने वालों में श्री सूरजभान शर्मा, श्री परमानन्द शर्मा, श्रीमती बिमला देवी, सन्तोष आर्या, सुनीता देवी, श्री नन्दलाल शर्मा आदि उपस्थित थे। शान्तिपाठ के बाद प्रीतिभोज किया गया।

—विनोद शर्मा, भाण्डवा, जिला भिवानी

स्वतन्त्रता सेनानी श्री हीरासिंह आर्य के स्मृति दिवस को प्रेरणा दिवस के रूप में मनाया गया

ग्राम उमरा (हिसार) में आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में 30.7.2015 को स्वतन्त्रता सेनानी महाशय हीरासिंह आर्य के स्मृति दिवस को प्रेरणा दिवस के रूप में मनाया गया। प्रात: 9 बजे पं. भरतलाल शास्त्री (हांसी) द्वारा हवन किया गया। बृजभान मलिक एसडीओ उमरा ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। शास्त्री जी ने आश्रम व्यवस्था व वर्ण व्यवस्था पर प्रकाश डाला। वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला तथा दो विधि और एक निधि की सुन्दर व्याख्या की।

स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास का आध्यात्मिक प्रवचन तथा कर्म फिलासफी पर प्रकाश डाला। साथ ही दुर्व्यसनों से दूर रहने का आह्वान किया। 7 युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया। आर्यसमाज उमरा की ओर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही व सुलतानपुर के पूर्व सरपंच श्री साधुराम मलिक को स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। उपरोक्त वक्ताओं ने महाशय हीरासिंह आर्य को श्रद्धांजलि देते हुए दृढ़ आर्य तथा सादगी का प्रतीक बताया। उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आग्रह किया। इस अवसर पर सातवास खाप के कई गांव के लोगों ने भाग लिया। बाबू हरनारायण मलिक रामायण, भीरसिंह सुलतानपुर, रामभगत सरपंच, भाल्लाराम पूर्व सरपंच मुहजादपुर, अत्तरसिंह स्नेही कंवारी, मा. जयवीर शर्मा ढडेरी, सेठ रामकुमार, सतपाल मलिक, रामकुमार मलिक, सूबेसिंह मलिक, सुरेश मलिक, दलीपसिंह मलिक उमरा निवासी आदि उपस्थित थे। शास्त्री जी के सुझाव पर भविष्य में सातवास के गांव में प्रत्येक रविवार को यज्ञ करने का निर्णय लिया गया। अगले रविवार को ग्राम ढडेरी में यज्ञ होगा। शान्तिपाठ के बाद ऋषिलंगर में भोजन किया गया।

-मा. दिलबाग सिंह आर्य, उपमंत्री वेदप्रचार मण्डल, हिसार

श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

दुनिया के सब नर-नारी! श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ।
ईश्वर के बनो पुजारी, श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ॥
फैला था अज्ञान जगत् में, घोर अविद्या छाई थी।
वेद-विरोधी दुष्टों ने तब, दुनिया तंग बनाई थी।
चहुंओर थी आहोजारी, श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ। ईश्वर के......... ॥
वेद सभ्यता सदाचार की, हँसी उड़ाई जाती थी।
विद्वानों का मान नहीं था, जनता अति दु:ख पाती थी।
गऊएं जाती थी मारी, श्री कृष्णचन्द्र क गुण गाओ। ईश्वर के......... ॥
जगदीश्वर ने कृपा की तब, श्री कृष्ण ने जन्म लिया।
भारत मां के तप:पूत ने, सकल विश्व का भला किया।
यदुनन्दन था बलकारी, श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ। ईश्वर के......... ॥
वह योद्धा मथुरा नगरी में, बनकर शेर दहाड़ा था।
पापी कंस दुराचारी को, उसने पकड़ पछाड़ा था।
तब खुश थी प्रजा सारी, श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ। ईश्वर के......... ॥
अपना मौसेरा भ्राता, शिशुपाल कुचाली मारा था।
धर्म युधिष्ठिर सत्यवादी को, पूरा दिया सहारा था।
थे कृष्णचन्द्र न्यायकारी, श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ। ईश्वर के......... ॥
जरासंध अत्याचारी को, भीमसेन पर मरवाया।
राज दिया उसके बेटे को, कभी न लालच में आया।
केशव त्यागी थे भारी, श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ। ईश्वर के......... ॥
आर्यावर्त के नेता उनकी, शिक्षा अगर मान जाएं।
धर्मधुरन्धर युगनायक को, अच्छी तरह जान जाएं।
सुख पायेंगे सब भारी, श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ। ईश्वर के......... ॥
धूर्त्त ढोंगियो! देवपुरुष को, जग में मत बदनाम करो।
मानव हो मानवता धारो, जागो! अच्छे काम करो।
कह 'नन्दलाल' प्रचारी, श्री कृष्णचन्द्र के गुण गाओ। ईश्वर के......... ॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

अहं के त्याग से ही प्रभु का........ प्रथम पृष्ठ का शेष.......

करते रहेंगे, हम अशान्त रहेंगे और जब हमारा मन इस सांसारिक मोह, ममताओं से सम्बन्ध विच्छेद कर लेगा तो हमें शान्ति मिलेगी। हम सोचते हैं यह तेरा है, यह मेरा है, यही तो दु:ख की जड़ है। इसके विपरीत जिसके जीवन से यह मेरा, तेरा निकल गया, शान्ति अपने आप मिल जायेगी। व्यक्ति चलता है दु:ख के मार्ग पर परन्तु चाहता है, मुझे शान्ति मिले। यही एक कारण है हमारे दु:ख का। अंहता, ममता जितनी अधिक होगी उतनी अशान्ति अधिक होगी और अंहता, ममता का जहां त्याग किया वहीं तत्काल शान्ति मिलेगी। सीधी और सरल बात है कि व्यवहार में कह दो कि यह जमीन, भवन, स्त्री, पुरुष, परिवार हमारे हैं, परन्तु अन्दर से इनमें ममता और आसक्ति न रखो। इसे एक दृष्टान्त से स्पष्ट करते हैं—

एक नगर में एक राजा के महल के पास एक साधु ने धर्म-चर्चा करनी प्रारम्भ की। नगर के सभी लोग वहां धर्म-चर्चा सुनने आते थे। इस धर्म-चर्चा का समाचार राजा तक पहुंचा। राजा ने सोचा कि उस साधु को अपने महल में लाया जाये। उस महल की शान-शौकत उसे दिखाई जाये। राजा साधु के पास पहुँचा और प्रार्थना की कि ''महाराज! हमारे महल में आने का कष्ट करें। हमने बहुत ही उत्तम महल बनाया है। देश-विदेश के कारीगरों ने अपनी कला से इसे सुसज्जित किया है। दुनिया के अनमोल पत्थर आदि से इसकी सज्जा की है। कृपया उस महल में चलिए।'' साधु ने विचार किया कि राजा को अपने महल का बहुत अहम् हो गया है। इसके इस 'अहम्' को समाप्त करने के लिए इसका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। साधु बाबा को राजा ने पूरा महल दिखाया। महल की सारी सुन्दरता का वर्णन करते-करते अपने आपको राजा आनन्दित कर रहा था। परन्तु साधु उसकी इस मूर्खता पर मन्द-मन्द मुस्करा रहा था। अन्तत: एक ऐसा स्थान दिखाया जहां कुछ चित्र लगे हुए थे। उन्हें भी साधु ने देखा। अब राजा ने पूरा महल दिखाकर साधु से पूछा-महाराज! हमारा महल कैसा है? साधु ने उत्तर दिया-राजन्! बहुत सुन्दर धर्मशाला बनाई है। यह सुनते ही राजा सकपका गया। राजा साधु से ऐसे उत्तर की अपेक्षा नहीं रखता था। राजा ने साधु से कहा-क्या कारण है कि आप इतने सुन्दर महल को एक सराय या धर्मशाला कह रहे हैं? साधु बाबा ने उन 'चित्रों की ओर संकेत करते हुए पूछा-यह चित्र किस-किस के हैं? राजा ने कहा-पहला चित्र मेरे परदादा जी का, दूसरा मेरे दादी जी का, तीसरा पिताजी का है और चौथा स्थान खाली है। साधु बाबा ने कहा-यहां पहले आपके परदादा जी, फिर आपके दादा जी, फिर पिताजी, अब आप और फिर आपके बच्चे रहेंगे। आप सदा तो यहां नहीं रहोगे। आपकी मृत्यु के बाद चौथे स्थान पर आपका चित्र लग जायेगा। राजन्! धर्मशाला या सराय भी ऐसी होती है। वहां भी लोग कुछ दिन रहते हैं, फिर छोड़कर चल देते हैं। इसी प्रकार आपके परदादा, दादा, पिता इस सराय में रहकर चले गये। आपके जाने के पश्चात् आपके पुत्र, पौत्र रहेंगे यह सराय नहीं तो और क्या है? राजा का अहं टूट गया। उसे वास्तविकता का ज्ञान हो गया।

व्यक्ति, वस्तु, पदार्थ हमें जो मिलते हैं, उसका हम सदुपयोग करें, अधिकार न जमायें। इस बात का पक्का विचार कर लें कि यह शरीर, संसार की सब वस्तुएं हमें कुछ समय के लिए प्रयोग के लिए मिली हैं। जिस प्रकार एक व्यक्ति गाड़ी में जहां तक की टिकट लेता है, वहां तक यात्रा करके गाड़ी छोड़ देता है। उसका उपयोग किया और संसार की सभी वस्तुओं में मोह नहीं करता इसी प्रकार हमें भी वस्तुओं के मोह करने की बजाय उसका सदुपयोग करने तक ही सीमित रहना होगा। यदि दुरुपयोग करेंगे तो दण्ड भोगना पड़ेगा। इन पर अपना अधिकार जमाना ही बन्धन है।

एक बात और यह है कि हम शरीर तथा वस्तुओं से सुख लेना चाहते हैं परन्तु मानव शरीर व सामग्री सुख तथा भोग के लिए ही नहीं है, यह तो दूसरों को सुख देने के लिए तथा दूसरों की सेवा के लिए मिली है। यदि हम सुख की कामना छोड़ देंगे, तो स्वत: ही महान् आनन्द और महती शान्ति की प्राप्ति होगी। अत: शान्ति का उपाय यही है कि व्यक्ति में 'मैं' नहीं हूं। शरीर संसार मेरे नहीं हैं, मुझे दूसरों से सुख लेना नहीं है, अपितु दूसरों को सुख देना है। जब यह भावना आ जाएगी तो आत्म-साक्षात्कार हो जायेगा। परन्तु इसके लिए अपने अहम् को त्यागना होगा। इसी संदेश के साथ मैं अपनी लेखनी को यहां विराम देता हूँ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि हम अपने अन्दर से 'अहम्' भाव को दूर कर सकें।

संपर्क-4/44, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा चलभाष 09911197073

गोवंश की उपेक्षा के दुष्परिणाम भोगने होंगे

गाय मरी तो बचता कौन?
गाय बची तो मरता कौन?

भारत एक कृषिप्रधान देश है। भारतवर्ष में गोपालन पर आधारित खेती एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था परस्पर एक-दूसरे के पूरक रहते हुए कृषि-ऊर्जा-परिवहन और खाद्यान्न के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए आए हैं, किन्तु विडम्बना है कि वर्तमान में गोपालन छोड़कर समाज में सबसे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के चक्कर में भोगवादी प्रवृत्ति के चलते महंगी यांत्रिकीय खेती और जहरीले कीटनाशकों एवं रासायनिक खाद का प्रयोग शुरू किया है तब से क्षणिक लाभोपरान्त दीर्घकालीन हानियां उजागर हो रही हैं। आज का मनुष्य अपने दीर्घकालीन लाभ को न देखते हुए लघुकालीन लाभ को देखकर अपनी धरती मां को जहरीला बना रहा है।

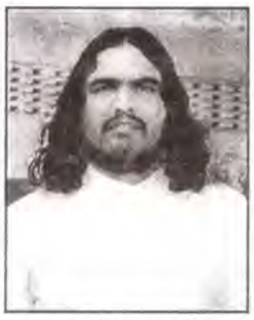

जब कृषिप्रधान देश भारतवर्ष में गोपालन के साथ बैलों से खेती की जाती थी तब भारतवर्ष की इस पूरी दुनिया में एक अलग ही पहचान थी। गोमाता का कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं जो हमारे लिए लाभदायक न हो। गोमाता के मल-मूत्र से लेकर उनका दूध-घी आदि पदार्थ मनुष्य मात्र के लिए बहुत ही उपयोगी है।

आज जब मनुष्य गाय को छोड़कर यांत्रिकीय खेती को महत्त्व दे रहा है तो उससे भूमि में रहने वाले अत्यन्त उपयोगी केंचुए जैसे करोड़ों जीवाणु के खत्म होने से जमीन बंजर हो रही है और [illegible]तों में उत्पन्न होने वाला अनाज विषैला होने से समस्त मानव जाति को अनेक प्रकार के रोग हो रहे हैं। आज के यांत्रिकीय युग में किसानों की दशा अत्यन्त दयनीय है। इसके विपरीत गोपालन से अमृततुल्य घी-दूध की प्राप्ति होती थी, जिससे बढ़ती जनसंख्या को पौष्टिक आहार मिलता था एवं खेतों की जुताई तथा अनाज की ढुलाई के साथ-साथ बहुमूल्य गोबर-गोमूत्र जैविक खाद घर बैठे निःशुल्क प्राप्त हो जाते थे।

दांतों तले तृण चाबकर,
दीन गायें कह रहीं।
हम हैं पशु तुम हो मनुज,
पर योग्य क्या तुमको यही,
हमने तुम्हें मां की तरह है,
दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमें,
तुमने हमारा वध किया।

देश में खुले आम मांस, चमड़ा तथा हड्डी के लिए गोवंश का वध हो रहा है। वैध-अवैध हजारों कत्लखाने चल रहे हैं, लाखों गोवंश प्रतिमास कसाई खाने जा रहा है। आंकड़े बताते हैं कि आजादीके वक्त देश में 83 करोड़ गोवंश था जो आज घटकर 10 करोड़ बच गया है।

—आचार्य योगेन्द्र आर्य, प्रधान
गोशाला संघ हरियाणा एवं गोरक्षा दल हरियाणा

स्व. डॉ. आर.टी. गुलाटी का स्मृति दिवस मनाया गया

हिसार। दिनांक 24.7.2015 को आर.टी. गुलाटी पूर्व प्रधान आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार का स्मृति दिवस मनाया गया। डॉ. रविदत्त शास्त्री ने डॉ. साहब को श्रद्धांजलि दी तथा मंच का संचालन किया। वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने डॉक्टर साहब को श्रद्धांजलि देते हुए उनके 13 वर्ष तक समाज के प्रधान पद पर रहते हुए रचनात्मक कार्यों की प्रशंसा की तथा चरित्रवान्, ईमानदार, कर्मयोगी बताया। वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने वेदमन्त्र की व्याख्या की तथा सन्ध्या-हवन को अपने जीवन से जोड़ने की अपील की। स्वामी सर्वदानन्द जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने आत्मा-परमात्मा पर प्रकाश डाला। गुरुकुल आर्यनगर के दो ब्रह्मचारियों ने ईश्वर भक्ति का भजन गाया। स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती छन्नो ठकराल ने भी श्रद्धांजलि दी। सभा की अध्यक्षता करते हुए जेल सुपरिटेण्डेण्ट हिसार के श्री शमशेर सिंह दहिया की धर्मपत्नी श्रीमती मंजुला दहिया ने भी डॉ. साहब को श्रद्धांजलि दी। डॉ. सुरेन्द्र गुलाटी ने सब विद्वान् वक्ताओं का धन्यवाद किया। कई गरीब महिलाओं को मशीन बांटी तथा गुरुकुल आर्यनगर के 11 छात्रों को वस्त्र दिए। शान्तिपाठ के बाद जलपान किया।

-मनुदेव शास्त्री, हिसार

महर्षि दयानन्द का वर्णव्यवस्था पर.... पृष्ठ 2 का शेष....

धर्मचर्य्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।।1।।
अधर्मचर्य्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।।2।।

यह दोनों वचन आपस्तम्ब के सूत्र हैं। धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम-उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण में गिना जाये कि जिस-जिस के योग्य होवे।1। वैसे अधर्माचरण से उत्तम वर्णवाला मनुष्य अपने से नीचे-नीचे वाले वर्ण को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जावे।2।

जैसे पुरुष जिस-जिस वर्ण के योग्य होता है वैसे ही स्त्रियों की भी व्यवस्था समझनी चाहिये। इससे सिद्ध हुआ कि इस प्रकार होने से सब वर्ण अपने-अपने गुण, कर्म, स्वभावयुक्त होकर शुद्धता के साथ रहते हैं अर्थात् ब्राह्मणकुल में कोई क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के सदृश न रहे। और क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र वर्ण भी शुद्ध रहते हैं। अर्थात् वर्णसंकरता प्राप्त न होगी। इस से किसी वर्ण की निन्दा वा अयोग्यता भी न होगी।

गुण, कर्म व स्वभाव से होने वाली वर्णव्यस्था से जुड़े एक महत्वपूर्ण प्रश्न को महर्षि दयानन्द ने प्रस्तुत किया है। वह कहते हैं कि जो किसी के एक ही पुत्र वा पुत्री हो और वह दूसरे वर्ण में प्रविष्ट हो जाये तो उसके मां बाप की सेवा कौन करेगा और वंशच्छेदन भी हो जायेगा। इस की क्या व्यवस्था होनी चाहिये? इसका उत्तर वह यह कहकर देते हैं कि न किसी की सेवा का भंग और न वंशच्छेदन होगा क्योंकि उन का अपने लड़के लड़कियों के बदले स्ववर्ण के योग्य दूसरे सन्तान विद्यासभा और राजसभा की व्यवस्था से मिलेंगे, इसलिये कुछ भी अव्यवस्था न होगी। यह गुण व कर्मों से वर्णों की व्यवस्था कन्याओं की सोलहवें वर्ष और पुरुषों की पच्चीसवें वर्ष की परीक्षा में नियत करनी चाहिये। और इसी क्रम से अर्थात् ब्राह्मण वर्ण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय वर्ण का क्षत्रिया, वैश्य वर्ण का वैश्या और शूद्र वर्ण का शूद्रा के साथ विवाह होना चाहिये। सभी अपने-अपने वर्णों के कर्म और परस्पर प्रीति भी यथायोग्य रहेगी। इसके बाद महर्षि दयानन्द ने चारों वर्णों के कर्तव्य कर्म और गुणों का वर्णन किया है जिसके लिए सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का चतुर्थ समुल्लास देखना चाहिये।

महर्षि दयानन्द ने यह उपदेश सन् 1874 में अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में प्रस्तुत किया है। उनके समय में वर्णव्यवस्था पूर्णरूपेण जन्म पर आधारित थी और आज भी है परन्तु तब और अब में काफी अन्तर आया है। समाज में माता-पिता द्वारा अपनी सन्तानों के विवाह अपनी-अपनी जन्मना जाति में ही किये जाते थे। उन दिनों प्रेम विवाह का प्रचलन नहीं हुआ था। बाल विवाह बहुतायत से होते थे। बहुत सी कन्यायें अल्पायु में विधवा हो जाती थीं और उन्हें सारा जीवन अविवाहित रहकर अवर्णनीय दुःखों को सहते हुए व्यतीत करना पड़ता था। दलित बन्धुओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति भी शोचनीय थी। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने इन क्रान्तिकारी विचारों को प्रस्तुत कर सही मायनों में सामाजिक क्रान्ति की थी। आज का समाज उनके विचारों से काफी सीमा तक प्रभावित हुआ है। जीवन व समाज के सभी पक्षों पर उन्होंने क्रान्तिकारी विचार प्रस्तुत कर उनका देशभर में प्रचार व प्रसार किया था। उसी का परिणाम विगत 140 वर्षों में देश की सामाजिक व आर्थिक स्थति में सुधार के रूप में दिखाई देता है। महर्षि दयानन्द ने देश व समाज को संवारने के लिए अपने जीवन की आहुति दी। उन्होंने विश्व इतिहास में अपूर्व आध्यात्मिक क्रान्ति भी की थी जिससे सभी मनुष्य सुखी जीवन व्यतीत करते हुए ईश्वर का साक्षात्कार तथा धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। उनका संसार के प्रत्येक मनुष्य पर ऋण है जिसे चुकाया नहीं जा सकता।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
फोन 09412985121

घर बैठे संस्कृताध्ययन का सुअवसर

आप सभी को जानकर अति प्रसन्नता होगी कि **माता करुणा शास्त्री संस्कृत ज्ञान-विज्ञान केन्द्र, हिसार** में उच्चारण शुद्धि (संस्कृत, हिन्दी), सामान्य संस्कृत, पाणिनीय व्याकरण एवं अन्य आर्ष साहित्य (दर्शन, उपनिषद् आदि) का अध्यापन **इंटरनेट या दूरदर्शन के माध्यम से** करवाया जा रहा है। अध्ययन के इच्छुक सज्जन अग्रलिखित दूरभाष संख्या पर सम्पर्क करें—

सत्यवान आर्य, म०नं० 310, डिफेन्स कालोनी, हिसार,
मो० 9467248777

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।

SCANNED
Name......................